**BSB Corinthians Unique Words - Numerical**

|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
|

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| Sosthenes | 1C 1: 1 | will of God, and our brother **Sosthenes**, |
| Confirmed | 1C 1: 6 | about Christ was **confirmed** in you. |
| Await | 1C 1: 7 | as you eagerly **await** the revelation of |
| Blameless | 1C 1: 8 | that you will be **blameless** on the day of |
| Sustain | 1C 1: 8 | He will **sustain** you to the end, so that |
| Agree | 1C 1:10 | all of you **agree** together, so that |
| Conviction | 1C 1:10 | may be united in mind and **conviction**. |
| United | 1C 1:10 | you may be **united** in mind and |
| Chloe’s | 1C 1:11 | some from **Chloe's** household have |
| Quarrels | 1C 1:11 | me that there are **quarrels** among you. |
| Individuals | 1C 1:12 | mean is this: **Individuals** among you are |
| Crispus | 1C 1:14 | any of you except **Crispus** and Gaius, |
| Gaius | 1C 1:14 | any of you except Crispus and **Gaius**, |
| Baptizing | 1C 1:16 | I do not remember **baptizing** anyone else. |
| Remember | 1C 1:16 | I do not **remember** baptizing anyone else. |
| Eloquent | 1C 1:17 | gospel, not with **eloquent** words of wisdom, |
| Emptied | 1C 1:17 | cross of Christ be **emptied** of its power. |
| Lest | 1C 1:17 | words of wisdom, **lest** the cross of |
| Frustrate | 1C 1:19 | of the intelligent I will **frustrate.|** |
| Intelligence | 1C 1:19 | wise; the **intelligence** of the |
| Intelligent | 1C 1:19 | of the **intelligent** I will |
| Philosopher | 1C 1:20 | Where is the **philosopher** of this age? |
| Scribe | 1C 1:20 | Where is the **scribe**? Where is the |
| Search | 1C 1:22 | demand signs and Greeks **search** for wisdom, |
| Strength | 1C 1:25 | of God is stronger than man's **strength**. |
| Wiser | 1C 1:25 | of God is **wiser** than man's wisdom, |
| Calling | 1C 1:26 | the time of your **calling**: Not many of you |
| Noble | 1C 1:26 | powerful; not many were of **noble** birth. |
| Despised | 1C 1:28 | the lowly and **despised** things of the |
| Lowly | 1C 1:28 | He chose the **lowly** and despised things of |
| Redemption | 1C 1:30 | righteousness, holiness, and **redemption**. |
| Eloquence | 1C 2: 1 | did not come with **eloquence** or wisdom as I |
| Demonstration | 1C 2: 4 | but with a **demonstration** of the Spirit's |
| Persuasive | 1C 2: 4 | were not with **persuasive** words of wisdom, |
| Spirit’s | 1C 2: 4 | a demonstration of the **Spirit's** power, |
| Destined | 1C 2: 7 | God, which He **destined** for our glory |
| Mysterious | 1C 2: 7 | speak of the **mysterious** and hidden wisdom |
| Imagined | 1C 2: 9 | no heart has **imagined**, what God has |
| Searches | 1C 2:10 | The Spirit **searches** all things, |
| Expressing | 1C 2:13 | the Spirit, **expressing** spiritual truths |
| Truths | 1C 2:13 | expressing spiritual **truths** in spiritual |
| Accept | 1C 2:14 | man does not **accept** the things that |
| Discerned | 1C 2:14 | because they are spiritually **discerned**. |
| Spiritually | 1C 2:14 | because they are **spiritually** discerned. |
| Address | 1C 3: 1 | I could not **address** you as spiritual, |
| Dissension | 1C 3: 3 | is jealousy and **dissension** among you, are |
| Walking | 1C 3: 3 | worldly? Are you not **walking** in the way of |
| Mere | 1C 3: 4 | |I follow Apollos,| are you not **mere** men? |
| Role | 1C 3: 5 | Lord has assigned to each his **role**. |
| Planted | 1C 3: 6 | I **planted** the seed and Apollos watered it, |
| Watered | 1C 3: 6 | seed and Apollos **watered** it, but God |
| Rewarded | 1C 3: 8 | each will be **rewarded** according to his |
| Builder | 1C 3:10 | a wise master **builder**, and someone else |
| Master | 1C 3:10 | as a wise **master** builder, and someone |
| Lay | 1C 3:11 | For no one can **lay** a foundation other than |
| Gold | 1C 3:12 | foundation using **gold**, silver, precious |
| Hay | 1C 3:12 | precious stones, wood, **hay**, or straw, |
| Precious | 1C 3:12 | gold, silver, **precious** stones, wood, |
| Silver | 1C 3:12 | using gold, **silver**, precious stones, |
| Stones | 1C 3:12 | silver, precious **stones**, wood, hay, |
| Straw | 1C 3:12 | precious stones, wood, hay, or **straw**, |
| Using | 1C 3:12 | this foundation **using** gold, silver, |
| Wood | 1C 3:12 | precious stones, **wood**, hay, or |
| Evident | 1C 3:13 | will be **evident**, because the |
| Quality | 1C 3:13 | will prove the **quality** of each man's |
| Survives | 1C 3:14 | he has built **survives**, he will receive |
| Burned | 1C 3:15 | If it is **burned** up, he will suffer loss. |
| Loss | 1C 3:15 | up, he will suffer **loss**. He himself will be |
| Snatched | 1C 3:15 | only as one being **snatched** from the fire. |
| Suffer | 1C 3:15 | up, he will **suffer** loss. He himself |
| Dwells | 1C 3:16 | and that God's Spirit **dwells** in you? |
| Destroys | 1C 3:17 | If anyone **destroys** God's temple, God will |
| Deceive | 1C 3:18 | Let no one **deceive** himself. If any of you |
| Catches | 1C 3:19 | is written: |He **catches** the wise in |
| Craftiness | 1C 3:19 | |He catches the wise in their **craftiness.|** |
| Future | 1C 3:22 | present or the **future**. All of them |
| Required | 1C 4: 2 | Now it is **required** of stewards that they |
| Court | 1C 4: 3 | or by any human **court**. In fact, I do |
| Vindicate | 1C 4: 4 | but that does not **vindicate** me. It is the |
| Expose | 1C 4: 5 | darkness and will **expose** the motives of |
| Applied | 1C 4: 6 | Brothers, I have **applied** these things to |
| Learn | 1C 4: 6 | so that you may **learn** from us not to |
| Superior | 1C 4: 7 | who makes you so **superior**? What do you have |
| Displayed | 1C 4: 9 | that God has **displayed** us apostles at |
| Prisoners | 1C 4: 9 | procession, like **prisoners** appointed for |
| Procession | 1C 4: 9 | of the **procession**, like prisoners |
| Seems | 1C 4: 9 | For it **seems** to me that God has displayed |
| Spectacle | 1C 4: 9 | have become a **spectacle** to the whole |
| Dishonored | 1C 4:10 | You are honored, but we are **dishonored**. |
| Brutally | 1C 4:11 | clad, we are **brutally** treated, we are |
| Clad | 1C 4:11 | we are poorly **clad**, we are brutally |
| Homeless | 1C 4:11 | we are brutally treated, we are **homeless**. |
| Poorly | 1C 4:11 | thirsty, we are **poorly** clad, we are |
| Thirsty | 1C 4:11 | are hungry and **thirsty**, we are poorly |
| Hard | 1C 4:12 | We work **hard** with our own hands. When we |
| Vilified | 1C 4:12 | When we are **vilified**, we bless; when |
| Gently | 1C 4:13 | slandered, we answer **gently**. Up to this |
| Moment | 1C 4:13 | Up to this **moment** we have become |
| Refuse | 1C 4:13 | of the earth, the **refuse** of the world. |
| Scum | 1C 4:13 | we have become the **scum** of the earth, the |
| Slandered | 1C 4:13 | when we are **slandered**, we answer gently. |
| Fathers | 1C 4:15 | not have many **fathers**; for in Christ |
| Guardians | 1C 4:15 | have ten thousand **guardians** in Christ, you |
| Exactly | 1C 4:17 | Jesus, which is **exactly** what I teach |
| Shortly | 1C 4:19 | will come to you **shortly**, if the Lord is |
| Talk | 1C 4:20 | God is not a matter of **talk** but of power. |
| Gentle | 1C 4:21 | or in love and with a **gentle** spirit? |
| Rod | 1C 4:21 | come to you with a **rod**, or in love and with |
| Father’s | 1C 5: 1 | among pagans: A man has his **father's** wife. |
| Intolerable | 1C 5: 1 | kind that is **intolerable** even among pagans: |
| Reported | 1C 5: 1 | It is actually **reported** that there is |
| Stricken | 1C 5: 2 | rather have been **stricken** with grief and |
| Pronounced | 1C 5: 3 | I have already **pronounced** judgment on the |
| Destruction | 1C 5: 5 | Satan for the **destruction** of the flesh, |
| Dough | 1C 5: 6 | yeast leavens the whole batch of **dough**? |
| Leavens | 1C 5: 6 | a little yeast **leavens** the whole batch |
| Lamb | 1C 5: 7 | our Passover **lamb**, has been |
| Passover | 1C 5: 7 | For Christ, our **Passover** lamb, has been |
| Rid | 1C 5: 7 | Get **rid** of the old yeast, that you |
| Festival | 1C 5: 8 | let us keep the **festival**, not with the old |
| Leavened | 1C 5: 8 | the old bread, **leavened** with malice and |
| Malice | 1C 5: 8 | leavened with **malice** and wickedness, |
| Including | 1C 5:10 | I was not **including** the sexually immoral |
| Leave | 1C 5:10 | case you would have to **leave** this world. |
| Abuser | 1C 5:11 | or a verbal **abuser**, a drunkard or |
| Claims | 1C 5:11 | with anyone who **claims** to be a |
| Drunkard | 1C 5:11 | verbal abuser, a **drunkard** or a swindler. |
| Idolater | 1C 5:11 | or greedy, an **idolater** or a verbal |
| Swindler | 1C 5:11 | a drunkard or a **swindler**. With such a man |
| Business | 1C 5:12 | What **business** of mine is it to judge |
| Inside | 1C 5:12 | Are you not to judge those **inside**? |
| Expel | 1C 5:13 | judge those outside. |**Expel** the wicked man |
| Grievance | 1C 6: 1 | you has a **grievance** against another, how |
| Unrighteous | 1C 6: 1 | before the **unrighteous** instead of |
| Trivial | 1C 6: 2 | you not competent to judge **trivial** cases? |
| Appoint | 1C 6: 4 | matters, do you **appoint** as judges those |
| Everyday | 1C 6: 4 | need to settle **everyday** matters, do you |
| Settle | 1C 6: 4 | you need to **settle** everyday matters, do |
| Arbitrate | 1C 6: 5 | enough to **arbitrate** between his |
| Front | 1C 6: 6 | another, and this in **front** of unbelievers! |
| Goes | 1C 6: 6 | Instead, one brother **goes** to law against |
| Cheated | 1C 6: 7 | be wronged? Why not rather be **cheated**? |
| Defeated | 1C 6: 7 | are thoroughly **defeated** already. Why |
| Lawsuits | 1C 6: 7 | that you have **lawsuits** among you means |
| Thoroughly | 1C 6: 7 | you are **thoroughly** defeated already. |
| Cheat | 1C 6: 8 | Instead, you yourselves **cheat** and do wrong, |
| Adulterers | 1C 6: 9 | nor idolaters, nor **adulterers**, nor men who |
| Homosexual | 1C 6: 9 | who submit to or perform **homosexual** acts, |
| Perform | 1C 6: 9 | who submit to or **perform** homosexual acts, |
| Abusers | 1C 6:10 | nor verbal **abusers**, nor swindlers, |
| Drunkards | 1C 6:10 | greedy, nor **drunkards**, nor verbal |
| Thieves | 1C 6:10 | nor **thieves**, nor the greedy, nor |
| Justified | 1C 6:11 | sanctified, you were **justified**, in the name |
| Washed | 1C 6:11 | But you were **washed**, you were sanctified, |
| Mastered | 1C 6:12 | but I will not be **mastered** by anything. |
| Unite | 1C 6:15 | of Christ and **unite** them with a |
| Abstain | 1C 7: 1 | is good to **abstain** from sexual relations. |
| Relations | 1C 7: 1 | is good to abstain from sexual **relations**. |
| Duty | 1C 7: 3 | fulfill his marital **duty** to his wife, |
| Fulfill | 1C 7: 3 | The husband should **fulfill** his marital duty |
| Marital | 1C 7: 3 | should fulfill his **marital** duty to his |
| Consent | 1C 7: 5 | except by mutual **consent** for a limited |
| Deprive | 1C 7: 5 | Do not **deprive** one another, except by |
| Devote | 1C 7: 5 | so you may **devote** yourselves to prayer. |
| Limited | 1C 7: 5 | consent for a **limited** time, so you |
| Self-control | 1C 7: 5 | you through your lack of **self-control**. |
| Tempt | 1C 7: 5 | Satan will not **tempt** you through your |
| Concession | 1C 7: 6 | say this as a **concession**, not as a command. |
| Widows | 1C 7: 8 | to the unmarried and **widows** I say this: It |
| Passion | 1C 7: 9 | to marry than to burn with **passion**. |
| Leaves | 1C 7:15 | if the unbeliever **leaves**, let him go. |
| Sister | 1C 7:15 | believing brother or **sister** is not bound |
| Lead | 1C 7:17 | each one should **lead** the life that |
| Prescribe | 1C 7:17 | is what I **prescribe** in all the |
| Regardless | 1C 7:17 | **Regardless**, each one should lead the life |
| Circumcision | 1C 7:19 | **Circumcision** is nothing and uncircumcision |
| Commandments | 1C 7:19 | Keeping God's **commandments** is what |
| Uncircumcision | 1C 7:19 | nothing and **uncircumcision** is nothing. |
| Conversely | 1C 7:22 | the Lord's freedman. **Conversely**, he who was |
| Freedman | 1C 7:22 | is the Lord's **freedman**. Conversely, he who |
| Slaves | 1C 7:23 | at a price; do not become **slaves** of men. |
| Trustworthy | 1C 7:25 | who by the Lord's mercy is **trustworthy**. |
| Virgins | 1C 7:25 | Now about **virgins**, I have no command from |
| Crisis | 1C 7:26 | of the present **crisis**, I think it |
| Commitment | 1C 7:27 | Are you free of **commitment**? Do not look for |
| Look | 1C 7:27 | of commitment? Do not **look** for a wife. |
| Released | 1C 7:27 | not seek to be **released**. Are you free of |
| Wives | 1C 7:29 | on those who have **wives** should live as if |
| Joyful | 1C 7:30 | not; those who are **joyful**, as if they were |
| Purchase | 1C 7:30 | those who make a **purchase**, as if they had |
| Weep | 1C 7:30 | those who **weep**, as if they did not; those |
| Dependent | 1C 7:31 | as if not **dependent** on them. For |
| Interests | 1C 7:34 | and his **interests** are divided. The |
| Decorum | 1C 7:35 | promote proper **decorum** and undivided |
| Promote | 1C 7:35 | in order to **promote** proper decorum and |
| Restrict | 1C 7:35 | own good, not to **restrict** you, but in order |
| Undivided | 1C 7:35 | decorum and **undivided** devotion to |
| Acting | 1C 7:36 | he is **acting** inappropriately toward |
| Betrothed | 1C 7:36 | toward his **betrothed**, and if |
| Inappropriately | 1C 7:36 | is acting **inappropriately** toward his |
| Youth | 1C 7:36 | she is beyond her **youth** and they ought to |
| Constraint | 1C 7:37 | and under no **constraint**, with control over |
| Resolve | 1C 7:37 | over his will and **resolve** in his heart not |
| Happier | 1C 7:40 | however, she is **happier** if she remains |
| Puffs | 1C 8: 1 | knowledge. Knowledge **puffs** up, but |
| Lords | 1C 8: 5 | there are many so-called gods and **lords**), |
| Accustomed | 1C 8: 7 | are still so **accustomed** to idols that |
| Defiled | 1C 8: 7 | their conscience is weak, it is **defiled**. |
| Closer | 1C 8: 8 | does not bring us **closer** to God: We are |
| Idol’s | 1C 8:10 | eating in an **idol's** temple, will he |
| Wounding | 1C 8:12 | way and **wounding** their weak |
| Cause | 1C 8:13 | so that I will not **cause** him to stumble. |
| Causes | 1C 8:13 | if what I eat **causes** my brother to stumble, |
| Apostleship | 1C 9: 2 | the seal of my **apostleship** in the Lord. |
| Scrutinize | 1C 9: 3 | is my defense to those who **scrutinize** me: |
| Barnabas | 1C 9: 6 | Or are **Barnabas** and I the only apostles |
| Expense | 1C 9: 7 | at his own **expense**? Who plants a |
| Flock | 1C 9: 7 | fruit? Who tends a **flock** and does not drink |
| Fruit | 1C 9: 7 | not eat of its **fruit**? Who tends a flock |
| Serves | 1C 9: 7 | Who **serves** as a soldier at his own |
| Soldier | 1C 9: 7 | Who serves as a **soldier** at his own expense? |
| Tends | 1C 9: 7 | of its fruit? Who **tends** a flock and does |
| Vineyard | 1C 9: 7 | Who plants a **vineyard** and does not |
| Perspective | 1C 9: 8 | from a human **perspective**? Doesn't the Law |
| Grain | 1C 9: 9 | treading out the **grain.|** Is it about |
| Muzzle | 1C 9: 9 | of Moses: |Do not **muzzle** an ox while it |
| Ox | 1C 9: 9 | |Do not muzzle an **ox** while it is treading |
| Oxen | 1C 9: 9 | Is it about **oxen** that God is |
| Treading | 1C 9: 9 | ox while it is **treading** out the grain.| Is |
| Isn'T | 1C 9:10 | **Isn't** He actually speaking on our behalf? |
| Plowman | 1C 9:10 | because when the **plowman** plows and the |
| Plows | 1C 9:10 | when the plowman **plows** and the thresher |
| Thresher | 1C 9:10 | and the **thresher** threshes, they |
| Threshes | 1C 9:10 | and the thresher **threshes**, they should also |
| Material | 1C 9:11 | us to reap a **material** harvest from you? |
| Exercise | 1C 9:12 | we did not **exercise** this right. Instead, |
| Hinder | 1C 9:12 | anything rather than **hinder** the gospel of |
| Offerings | 1C 9:13 | at the altar partake of its **offerings**? |
| Prescribed | 1C 9:14 | the Lord has **prescribed** that those who |
| Suggest | 1C 9:15 | writing this to **suggest** that something be |
| Used | 1C 9:15 | But I have not **used** any of these rights. |
| Obligated | 1C 9:16 | because I am **obligated** to preach. Woe |
| Woe | 1C 9:16 | I am obligated to preach. **Woe** to me if I do |
| Entrusted | 1C 9:17 | I am still **entrusted** with a responsibility. |
| Responsibility | 1C 9:17 | am still entrusted with a **responsibility**. |
| Obligation | 1C 9:19 | I am free of **obligation** to anyone, I make |
| Jew | 1C 9:20 | I became like a **Jew**, to win the Jews. |
| Blessings | 1C 9:23 | that I may share in its **blessings**. |
| Race | 1C 9:24 | know that in a **race** all the runners run, |
| Receives | 1C 9:24 | but only one **receives** the prize? Run |
| Runners | 1C 9:24 | a race all the **runners** run, but only one |
| Competes | 1C 9:25 | Everyone who **competes** in the games trains |
| Games | 1C 9:25 | competes in the **games** trains with strict |
| Strict | 1C 9:25 | trains with **strict** discipline. They |
| Trains | 1C 9:25 | in the games **trains** with strict discipline. |
| Aimlessly | 1C 9:26 | I do not run **aimlessly**; I do not fight |
| Beating | 1C 9:26 | do not fight like I am **beating** the air. |
| Fight | 1C 9:26 | aimlessly; I do not **fight** like I am beating |
| Disqualified | 1C 9:27 | others, I myself will not be **disqualified**. |
| Forefathers | 1C 10: 1 | that our **forefathers** were all |
| Ate | 1C 10: 3 | They all **ate** the same spiritual food |
| Accompanied | 1C 10: 4 | rock that **accompanied** them, and |
| Nevertheless | 1C 10: 5 | **Nevertheless**, God was not pleased with |
| Wilderness | 1C 10: 5 | they were struck down in the **wilderness**. |
| Craving | 1C 10: 6 | to keep us from **craving** evil things as they |
| Place | 1C 10: 6 | These things took **place** as examples to |
| Got | 1C 10: 7 | and to drink, and **got** up to revel in |
| Revel | 1C 10: 7 | drink, and got up to **revel** in idolatry.| |
| Sat | 1C 10: 7 | is written: |The people **sat** down to eat and |
| Twenty-three | 1C 10: 8 | in one day **twenty-three** thousand of them |
| Snakes | 1C 10: 9 | them did, and were killed by **snakes**. |
| Complain | 1C 10:10 | And do not **complain**, as some of them did, |
| Destroying | 1C 10:10 | and were killed by the **destroying** angel. |
| Ages | 1C 10:11 | whom the fulfillment of the **ages** has come. |
| Fulfillment | 1C 10:11 | us, on whom the **fulfillment** of the ages has |
| Happened | 1C 10:11 | Now these things **happened** to them as |
| Warnings | 1C 10:11 | written down as **warnings** for us, on |
| Escape | 1C 10:13 | also provide an **escape**, so that you |
| Provide | 1C 10:13 | He will also **provide** an escape, so |
| Seized | 1C 10:13 | No temptation has **seized** you except what |
| Temptation | 1C 10:13 | No **temptation** has seized you except what |
| Reasonable | 1C 10:15 | I speak to **reasonable** people; judge for |
| Break | 1C 10:16 | bread that we **break** a participation in |
| Israel | 1C 10:18 | the people of **Israel**: Are not those |
| Partakers | 1C 10:18 | sacrifices fellow **partakers** in the |
| Suggesting | 1C 10:19 | Am I **suggesting**, then, that food |
| Participants | 1C 10:20 | want you to be **participants** with demons. |
| Provoke | 1C 10:22 | we trying to **provoke** the Lord to |
| Edifying | 1C 10:23 | but not everything is **edifying**. |
| Market | 1C 10:25 | the meat **market** without raising |
| Sold | 1C 10:25 | Eat anything **sold** in the meat market |
| Fullness | 1C 10:26 | is the Lord's, and the **fullness** thereof.| |
| Thereof | 1C 10:26 | is the Lord's, and the fullness **thereof.|** |
| Invites | 1C 10:27 | If an unbeliever **invites** you to a meal and |
| Tells | 1C 10:28 | But if someone **tells** you, |This food was |
| Determined | 1C 10:29 | my freedom be **determined** by someone else's |
| Else’s | 1C 10:29 | determined by someone **else's** conscience? |
| One’s | 1C 10:29 | the other **one's** conscience, I mean, not |
| Denounced | 1C 10:30 | why am I **denounced** because of that |
| Thankfulness | 1C 10:30 | the meal with **thankfulness**, why am I |
| Whatever | 1C 10:31 | eat or drink or **whatever** you do, do it |
| Maintaining | 1C 11: 2 | and for **maintaining** the traditions, |
| Remembering | 1C 11: 2 | you for **remembering** me in |
| Traditions | 1C 11: 2 | for maintaining the **traditions**, just as I |
| Covered | 1C 11: 4 | with his head **covered** dishonors his head. |
| Created | 1C 11: 9 | Neither was man **created** for woman, but |
| Born | 1C 11:12 | also man is **born** of woman. But |
| Disgrace | 1C 11:14 | has long hair, it is a **disgrace** to him, |
| Itself | 1C 11:14 | Doesn't nature **itself** teach you that if a |
| Nature | 1C 11:14 | Doesn't **nature** itself teach you that if a |
| Covering | 1C 11:15 | is given to her as a **covering**. |
| Dispute | 1C 11:16 | is inclined to **dispute** this, we have |
| Following | 1C 11:17 | In the **following** instructions I have no |
| Gatherings | 1C 11:17 | offer, because your **gatherings** do more harm |
| Harm | 1C 11:17 | your gatherings do more **harm** than good. |
| Hear | 1C 11:18 | First of all, I **hear** that when you come |
| Differences | 1C 11:19 | there must be **differences** among you to |
| Drunk | 1C 11:21 | one remains hungry, another gets **drunk**. |
| Exclusion | 1C 11:21 | meal to the **exclusion** of others. While |
| Gets | 1C 11:21 | one remains hungry, another **gets** drunk. |
| Proceed | 1C 11:21 | eat, many of you **proceed** with your own meal |
| Course | 1C 11:22 | I praise you for this? Of **course** not! |
| Despise | 1C 11:22 | drink? Or do you **despise** the church of God |
| Homes | 1C 11:22 | you have your own **homes** in which to eat |
| Humiliate | 1C 11:22 | of God and **humiliate** those who have |
| Betrayed | 1C 11:23 | on the night He was **betrayed**, took bread, |
| Broke | 1C 11:24 | given thanks, He **broke** it and said, |
| Guilty | 1C 11:27 | manner will be **guilty** of sinning against |
| Recognizing | 1C 11:29 | drinks without **recognizing** the body |
| Number | 1C 11:30 | and sick, and a **number** of you have fallen |
| Sick | 1C 11:30 | you are weak and **sick**, and a number of |
| Properly | 1C 11:31 | we judged ourselves **properly**, we would not |
| Condemned | 1C 11:32 | we will not be **condemned** with the world. |
| Disciplined | 1C 11:32 | we are being **disciplined** so that we |
| Remaining | 1C 11:34 | instructions about the **remaining** matters. |
| Uninformed | 1C 12: 1 | do not want you to be **uninformed**. |
| Influenced | 1C 12: 2 | pagans, you were **influenced** and led astray |
| Mute | 1C 12: 2 | influenced and led astray to **mute** idols. |
| Cursed | 1C 12: 3 | God says, |Jesus be **cursed,|** and no one can |
| Inform | 1C 12: 3 | Therefore I **inform** you that no one who is |
| Ministries | 1C 12: 5 | are different **ministries**, but the |
| Works | 1C 12: 6 | but the same God **works** all things in all |
| Manifestation | 1C 12: 7 | each one the **manifestation** of the Spirit |
| Distinguishing | 1C 12:10 | to another **distinguishing** between spirits, |
| Apportions | 1C 12:11 | same Spirit, who **apportions** them to each |
| Determines | 1C 12:11 | them to each one as He **determines**. |
| Comprised | 1C 12:12 | though it is **comprised** of many parts. |
| Unit | 1C 12:12 | The body is a **unit**, though it is comprised |
| Consist | 1C 12:14 | the body does not **consist** of one part, but |
| Foot | 1C 12:15 | If the **foot** should say, |Because I am not |
| Hearing | 1C 12:17 | would the sense of **hearing** be? If the whole |
| Smell | 1C 12:17 | ear, where would the sense of **smell** be? |
| Arranged | 1C 12:18 | fact, God has **arranged** the members of |
| Design | 1C 12:18 | one of them, according to His **design**. |
| Indispensable | 1C 12:22 | that seem to be weaker are **indispensable**, |
| Weaker | 1C 12:22 | that seem to be **weaker** are indispensable, |
| Honorable | 1C 12:23 | we consider less **honorable**, we treat with |
| Modesty | 1C 12:23 | parts are treated with special **modesty**, |
| Special | 1C 12:23 | parts are treated with **special** modesty, |
| Unpresentable | 1C 12:23 | And our **unpresentable** parts are |
| Composed | 1C 12:24 | need. But God has **composed** the body and has |
| Lacked | 1C 12:24 | greater honor to the parts that **lacked** it, |
| Presentable | 1C 12:24 | whereas our **presentable** parts have no such |
| Whereas | 1C 12:24 | **whereas** our presentable parts have no such |
| Division | 1C 12:25 | should be no **division** in the body, |
| Member | 1C 12:27 | and each of you is a **member** of it. |
| Administration | 1C 12:28 | healing, helping, **administration**, and various |
| Helping | 1C 12:28 | of healing, **helping**, administration, and |
| Clanging | 1C 13: 1 | only a ringing gong or a **clanging** cymbal. |
| Cymbal | 1C 13: 1 | a ringing gong or a clanging **cymbal**. |
| Gong | 1C 13: 1 | only a ringing **gong** or a clanging |
| Ringing | 1C 13: 1 | I am only a **ringing** gong or a clanging |
| Absolute | 1C 13: 2 | and if I have **absolute** faith so as to |
| Fathom | 1C 13: 2 | prophecy and can **fathom** all mysteries and |
| Mountains | 1C 13: 2 | so as to move **mountains**, but have not love, |
| Move | 1C 13: 2 | faith so as to **move** mountains, but have not |
| Exult | 1C 13: 3 | to the poor and **exult** in the surrender of |
| Possess | 1C 13: 3 | I give all I **possess** to the poor and |
| Surrender | 1C 13: 3 | and exult in the **surrender** of my body, but |
| Envy | 1C 13: 4 | kind. It does not **envy**, it does not boast, |
| Angered | 1C 13: 5 | is not easily **angered**, it keeps no |
| Keeps | 1C 13: 5 | easily angered, it **keeps** no account of |
| Rude | 1C 13: 5 | It is not **rude**, it is not self-seeking, it |
| Self-seeking | 1C 13: 5 | it is not **self-seeking**, it is not |
| Wrongs | 1C 13: 5 | angered, it keeps no account of **wrongs**. |
| Pleasure | 1C 13: 6 | Love takes no **pleasure** in evil, but |
| Bears | 1C 13: 7 | It **bears** all things, believes all things, |
| Believes | 1C 13: 7 | all things, **believes** all things, |
| Hopes | 1C 13: 7 | all things, **hopes** all things, |
| Cease | 1C 13: 8 | they will **cease**; where there |
| Dismissed | 1C 13: 8 | there is knowledge, it will be **dismissed**. |
| Fails | 1C 13: 8 | Love never **fails**. But where there are |
| Prophecies | 1C 13: 8 | there are **prophecies**, they will |
| Partial | 1C 13:10 | perfect comes, the **partial** passes away. |
| Passes | 1C 13:10 | perfect comes, the partial **passes** away. |
| Childish | 1C 13:11 | became a man, I set aside **childish** ways. |
| Reasoned | 1C 13:11 | like a child, I **reasoned** like a child. When |
| Talked | 1C 13:11 | was a child, I **talked** like a child, I |
| Dim | 1C 13:12 | we see but a **dim** reflection as in a |
| Mirror | 1C 13:12 | as in a **mirror**; then we shall |
| Reflection | 1C 13:12 | see but a dim **reflection** as in a mirror; |
| Greatest | 1C 13:13 | love; but the **greatest** of these is |
| Pursue | 1C 14: 1 | Earnestly **pursue** love and eagerly desire |
| Understands | 1C 14: 2 | Indeed, no one **understands** him; he utters |
| Utters | 1C 14: 2 | understands him; he **utters** mysteries in the |
| Edification | 1C 14: 3 | for their **edification**, encouragement, and |
| Interprets | 1C 14: 5 | tongues, unless he **interprets**, so that the |
| Distinct | 1C 14: 7 | are playing unless the notes are **distinct**? |
| Flute | 1C 14: 7 | such as the **flute** or harp, how |
| Harp | 1C 14: 7 | the flute or **harp**, how will anyone |
| Instruments | 1C 14: 7 | case of lifeless **instruments**, such as the |
| Lifeless | 1C 14: 7 | the case of **lifeless** instruments, such as |
| Notes | 1C 14: 7 | are playing unless the **notes** are distinct? |
| Playing | 1C 14: 7 | tune they are **playing** unless the notes |
| Recognize | 1C 14: 7 | how will anyone **recognize** the tune they |
| Tune | 1C 14: 7 | anyone recognize the **tune** they are playing |
| Battle | 1C 14: 8 | muffled call, who will prepare for **battle**? |
| Muffled | 1C 14: 8 | trumpet sounds a **muffled** call, who will |
| Prepare | 1C 14: 8 | muffled call, who will **prepare** for battle? |
| Sounds | 1C 14: 8 | if the trumpet **sounds** a muffled call, |
| Intelligible | 1C 14: 9 | you speak **intelligible** words with |
| Assuredly | 1C 14:10 | **Assuredly**, there are many different |
| Languages | 1C 14:10 | are many different **languages** in the world, |
| Language | 1C 14:11 | meaning of someone's **language**, I am a |
| Someone’s | 1C 14:11 | the meaning of **someone's** language, I am |
| Strive | 1C 14:12 | have spiritual gifts, **strive** to excel in |
| Unfruitful | 1C 14:14 | spirit prays, but my mind is **unfruitful**. |
| Coherent | 1C 14:19 | speak five **coherent** words to |
| Foreign | 1C 14:21 | strange tongues and **foreign** lips I will |
| Lips | 1C 14:21 | tongues and foreign **lips** I will speak |
| Strange | 1C 14:21 | the Law: |By **strange** tongues and foreign |
| Convicted | 1C 14:24 | he will be **convicted** and called to |
| Prophesying | 1C 14:24 | while everyone is **prophesying**, he will be |
| Facedown | 1C 14:25 | he will fall **facedown** and worship God, |
| Proclaiming | 1C 14:25 | and worship God, **proclaiming**, |God is truly |
| Secrets | 1C 14:25 | and the **secrets** of his heart will be |
| Truly | 1C 14:25 | proclaiming, |God is **truly** among you!| |
| Worship | 1C 14:25 | facedown and **worship** God, proclaiming, |
| Psalm | 1C 14:26 | everyone has a **psalm** or a teaching, |
| Interpreter | 1C 14:28 | there is no **interpreter**, he should remain |
| Carefully | 1C 14:29 | others should weigh **carefully** what is said. |
| Weigh | 1C 14:29 | the others should **weigh** carefully what is |
| Seated | 1C 14:30 | someone who is **seated**, the first speaker |
| Instructed | 1C 14:31 | everyone may be **instructed** and encouraged. |
| Congregations | 1C 14:33 | As in all the **congregations** of the saints, |
| Submission | 1C 14:34 | but must be in **submission**, as the Law says. |
| Women | 1C 14:34 | **women** are to be silent in the |
| Dishonorable | 1C 14:35 | home; for it is **dishonorable** for a woman to |
| Husbands | 1C 14:35 | to ask their own **husbands** at home; for it |
| Inquire | 1C 14:35 | they wish to **inquire** about something, they |
| Ones | 1C 14:36 | Or are you the only **ones** it has reached? |
| Originate | 1C 14:36 | Did God's word **originate** with you? Or are |
| Reached | 1C 14:36 | you the only ones it has **reached**? |
| Acknowledge | 1C 14:37 | person, let him **acknowledge** that what I |
| Considers | 1C 14:37 | If anyone **considers** himself a prophet or |
| Prophet | 1C 14:37 | himself a **prophet** or spiritual |
| Ignored | 1C 14:38 | ignores this, he himself will be **ignored**. |
| Ignores | 1C 14:38 | But if anyone **ignores** this, he himself |
| Forbid | 1C 14:39 | and do not **forbid** speaking in tongues. |
| Orderly | 1C 14:40 | be done in a proper and **orderly** manner. |
| Importance | 1C 15: 3 | as of first **importance**: that Christ died |
| Buried | 1C 15: 4 | that He was **buried**, that He was raised on |
| Twelve | 1C 15: 5 | to Cephas and then to the **Twelve**. |
| Hundred | 1C 15: 6 | more than five **hundred** brothers at once, |
| James | 1C 15: 7 | Then He appeared to **James**, then to all the |
| Untimely | 1C 15: 8 | me also, as to one of **untimely** birth. |
| Least | 1C 15: 9 | For I am the **least** of the apostles and am |
| Worked | 1C 15:10 | in vain. No, I **worked** harder than all of |
| Worthless | 1C 15:14 | our preaching is **worthless**, and so is |
| Exposed | 1C 15:15 | we are also **exposed** as false witnesses |
| Testified | 1C 15:15 | For we have **testified** about God that |
| Perished | 1C 15:18 | fallen asleep in Christ have **perished**. |
| Alone | 1C 15:19 | is for this life **alone**, we are to be |
| Pitied | 1C 15:19 | we are to be **pitied** more than all men. |
| Dominion | 1C 15:24 | destroyed all **dominion**, authority, and |
| Enemies | 1C 15:25 | He has put all His **enemies** under His feet. |
| Reign | 1C 15:25 | For He must **reign** until He has put all His |
| Enemy | 1C 15:26 | The last **enemy** to be destroyed is death. |
| Clearly | 1C 15:27 | under Him, this **clearly** does not include |
| Include | 1C 15:27 | clearly does not **include** the One who |
| Subjected | 1C 15:28 | things have been **subjected** to Him, then |
| Endanger | 1C 15:30 | why do we **endanger** ourselves every hour? |
| Beasts | 1C 15:32 | I fought wild **beasts** in Ephesus for |
| Fought | 1C 15:32 | If I **fought** wild beasts in Ephesus for |
| Tomorrow | 1C 15:32 | us eat and drink, for **tomorrow** we die.| |
| Wild | 1C 15:32 | If I fought **wild** beasts in Ephesus for |
| Character | 1C 15:33 | |Bad company corrupts good **character.|** |
| Company | 1C 15:33 | deceived: |Bad **company** corrupts good |
| Corrupts | 1C 15:33 | |Bad company **corrupts** good character.| |
| Ignorant | 1C 15:34 | some of you are **ignorant** of God. I say |
| Sober | 1C 15:34 | **Sober** up as you ought, and stop |
| Wheat | 1C 15:37 | seed, perhaps of **wheat** or something else. |
| Designed | 1C 15:38 | body as He has **designed**, and to each kind |
| Animals | 1C 15:39 | kind of flesh, **animals** have another, birds |
| Birds | 1C 15:39 | have another, **birds** another, and |
| Fish | 1C 15:39 | another, birds another, and **fish** another. |
| Differs | 1C 15:41 | another; and star **differs** from star in |
| Moon | 1C 15:41 | of splendor, the **moon** another, and the |
| Stars | 1C 15:41 | another, and the **stars** another; and star |
| Sun | 1C 15:41 | The **sun** has one degree of splendor, the |
| Life-giving | 1C 15:45 | the last Adam a **life-giving** spirit. |
| Dust | 1C 15:47 | man was of the **dust** of the earth, the |
| Borne | 1C 15:49 | just as we have **borne** the likeness of the |
| Declare | 1C 15:50 | Now I **declare** to you, brothers, that flesh |
| Mystery | 1C 15:51 | I tell you a **mystery**: We will not all |
| Instant | 1C 15:52 | in an **instant**, in the twinkling of an eye, |
| Twinkling | 1C 15:52 | an instant, in the **twinkling** of an eye, at |
| Pass | 1C 15:54 | will come to **pass**: |Death has been |
| Immovable | 1C 15:58 | be steadfast and **immovable**. Always excel in |
| Steadfast | 1C 15:58 | brothers, be **steadfast** and immovable. |
| Collection | 1C 16: 1 | Now about the **collection** for the saints, |
| Directed | 1C 16: 1 | do as I **directed** the churches of |
| Galatia | 1C 16: 1 | as I directed the churches of **Galatia**: |
| Collections | 1C 16: 2 | when I come no **collections** will be needed. |
| Income | 1C 16: 2 | a portion of his **income**, saving it up, so |
| Needed | 1C 16: 2 | I come no collections will be **needed**. |
| Portion | 1C 16: 2 | set aside a **portion** of his income, |
| Saving | 1C 16: 2 | of his income, **saving** it up, so |
| Week | 1C 16: 2 | first day of every **week**, each of you should |
| Jerusalem | 1C 16: 3 | recommend to carry your gift to **Jerusalem**. |
| Recommend | 1C 16: 3 | with those you **recommend** to carry your |
| Advisable | 1C 16: 4 | And if it is **advisable** for me to go also, |
| Travel | 1C 16: 4 | me to go also, they can **travel** with me. |
| Going | 1C 16: 5 | for I will be **going** through Macedonia. |
| Awhile | 1C 16: 6 | stay with you **awhile**, or even spend |
| Journey | 1C 16: 6 | help me on my **journey**, wherever I may go. |
| Wherever | 1C 16: 6 | help me on my journey, **wherever** I may go. |
| Winter | 1C 16: 6 | or even spend the **winter**, so that you can |
| Permits | 1C 16: 7 | time with you, if the Lord **permits**. |
| Pentecost | 1C 16: 8 | I will stay in Ephesus until **Pentecost**, |
| Effective | 1C 16: 9 | great door for **effective** work has opened |
| Opened | 1C 16: 9 | effective work has **opened** to me, even |
| Oppose | 1C 16: 9 | opened to me, even though many **oppose** me. |
| Contempt | 1C 16:11 | treat him with **contempt**. Send him on |
| Expecting | 1C 16:11 | me, for I am **expecting** him along with the |
| Strongly | 1C 16:12 | brother Apollos: I **strongly** urged him to |
| Alert | 1C 16:13 | Be on the **alert**. Stand firm in the faith. |
| Courage | 1C 16:13 | the faith. Be men of **courage**. Be strong. |
| Converts | 1C 16:15 | were the first **converts** in Achaia, and |
| Devoted | 1C 16:15 | and they have **devoted** themselves to the |
| Laborer | 1C 16:16 | and to every fellow worker and **laborer**. |
| Achaicus | 1C 16:17 | Fortunatus, and **Achaicus** have arrived, |
| Fortunatus | 1C 16:17 | that Stephanas, **Fortunatus**, and Achaicus |
| Glad | 1C 16:17 | I am **glad** that Stephanas, Fortunatus, and |
| Appreciation | 1C 16:18 | Show your **appreciation**, therefore, to |
| Aquila | 1C 16:19 | send you greetings. **Aquila** and Prisca greet |
| Meets | 1C 16:19 | does the church that **meets** at their house. |
| Prisca | 1C 16:19 | Aquila and **Prisca** greet you |
| Warmly | 1C 16:19 | Prisca greet you **warmly** in the Lord, |
| Greeting | 1C 16:21 | This **greeting** is in my own hand--Paul. |
| Curse | 1C 16:22 | him be under a divine **curse**. Come, O Lord! |
| Throughout | 2C 1: 1 | with all the saints **throughout** Achaia: |
| Blessed | 2C 1: 3 | **Blessed** be the God and Father of |
| Compassion | 2C 1: 3 | the Father of **compassion** and the God |
| Trouble | 2C 1: 4 | those in any **trouble** with the comfort |
| Accomplishes | 2C 1: 6 | comfort, which **accomplishes** in you |
| Afflicted | 2C 1: 6 | If we are **afflicted**, it is for your |
| Experience | 2C 1: 6 | of the same sufferings we **experience**. |
| Sure | 2C 1: 7 | hope for you is **sure**, because we know that |
| Despaired | 2C 1: 8 | endure, so that we **despaired** even of life. |
| Encountered | 2C 1: 8 | hardships we **encountered** in the |
| Raises | 2C 1: 9 | but in God, who **raises** the dead. |
| Sentence | 2C 1: 9 | were under the **sentence** of death, in |
| Trust | 2C 1: 9 | we would not **trust** in ourselves, but |
| Deadly | 2C 1:10 | us from such a **deadly** peril, and He will |
| Delivered | 2C 1:10 | He has **delivered** us from such a deadly |
| Peril | 2C 1:10 | such a deadly **peril**, and He will |
| Shown | 2C 1:11 | behalf for the favor **shown** us in answer to |
| Conducted | 2C 1:12 | that we have **conducted** ourselves in the |
| Relation | 2C 1:12 | and especially in **relation** to you, in |
| Testifies | 2C 1:12 | Our conscience **testifies** that we |
| Completely | 2C 1:13 | hope that you will understand **completely**, |
| Double | 2C 1:15 | that you might receive a **double** blessing. |
| Judea | 2C 1:16 | help me on my way to **Judea**. |
| Carelessly | 2C 1:17 | did I do it **carelessly**? Or do I make |
| Plans | 2C 1:17 | do I make my **plans** by human standards, so |
| Silvanus | 2C 1:19 | you by me and **Silvanus** and Timothy, was not |
| Anointed | 2C 1:21 | us and you in Christ. He **anointed** us, |
| Establishes | 2C 1:21 | it is God who **establishes** both us and you |
| Witness | 2C 1:23 | call God as my **witness** that it was in |
| Painful | 2C 2: 1 | not to make another **painful** visit to you. |
| Cheer | 2C 2: 2 | who is left to **cheer** me but those whom |
| Saddened | 2C 2: 3 | I would not be **saddened** by those who ought |
| Anguish | 2C 2: 4 | great distress and **anguish** of heart, not |
| Distress | 2C 2: 4 | out of great **distress** and anguish of |
| Tears | 2C 2: 4 | For through many **tears** I wrote you out of |
| Overstate | 2C 2: 5 | you--to some degree, not to **overstate** it. |
| Imposed | 2C 2: 6 | The punishment **imposed** on him by the |
| Majority | 2C 2: 6 | him by the **majority** is sufficient for |
| Punishment | 2C 2: 6 | The **punishment** imposed on him by the |
| Excessive | 2C 2: 7 | not be overwhelmed by **excessive** sorrow. |
| Overwhelmed | 2C 2: 7 | not be **overwhelmed** by excessive |
| Reaffirm | 2C 2: 8 | I urge you to **reaffirm** your love for him. |
| Outwit | 2C 2:11 | that Satan should not **outwit** us. For we are |
| Schemes | 2C 2:11 | we are not unaware of his **schemes**. |
| Troas | 2C 2:12 | when I went to **Troas** to preach the gospel |
| Goodbye | 2C 2:13 | there. So I said **goodbye** to them and went |
| Captives | 2C 2:14 | us triumphantly as **captives** in Christ and |
| Spreads | 2C 2:14 | through us **spreads** everywhere the |
| Triumphantly | 2C 2:14 | always leads us **triumphantly** as captives in |
| Aroma | 2C 2:15 | God the sweet **aroma** of Christ among |
| Sweet | 2C 2:15 | are to God the **sweet** aroma of Christ among |
| Demise | 2C 2:16 | odor of death and **demise**; to the other, a |
| Odor | 2C 2:16 | one, we are an **odor** of death and demise; |
| Task | 2C 2:16 | who is qualified for such a **task**? |
| Peddle | 2C 2:17 | so many others, who **peddle** the word of God |
| Profit | 2C 2:17 | word of God for **profit**. On the contrary, in |
| Beginning | 2C 3: 1 | Are we **beginning** to commend ourselves |
| Recommendation | 2C 3: 1 | people, letters of **recommendation** to you or |
| Inscribed | 2C 3: 2 | are our letter, **inscribed** on our hearts, |
| Ink | 2C 3: 3 | written not with **ink** but with the |
| Claim | 2C 3: 5 | in ourselves to **claim** that anything comes |
| Competence | 2C 3: 5 | us, but our **competence** comes from God. |
| Kills | 2C 3: 6 | for the letter **kills**, but the Spirit |
| Ministers | 2C 3: 6 | qualified us as **ministers** of a new |
| Engraved | 2C 3: 7 | death, which was **engraved** in letters on |
| Fleeting | 2C 3: 7 | of Moses because of its **fleeting** glory, |
| Gaze | 2C 3: 7 | Israelites could not **gaze** at the face |
| Condemnation | 2C 3: 9 | ministry of **condemnation** was glorious, |
| Surpasses | 2C 3:10 | comparison to the glory that **surpasses** it. |
| Gazing | 2C 3:13 | the Israelites from **gazing** at the end |
| Closed | 2C 3:14 | their minds were **closed**. For to this |
| Lifted | 2C 3:14 | has not been **lifted**, because only in |
| Reading | 2C 3:14 | remains at the **reading** of the old |
| Covers | 2C 3:15 | Moses is read, a veil **covers** their hearts. |
| Taken | 2C 3:16 | to the Lord, the veil is **taken** away. |
| Turns | 2C 3:16 | But whenever anyone **turns** to the Lord, the |
| Whenever | 2C 3:16 | But **whenever** anyone turns to the Lord, the |
| Faces | 2C 3:18 | who with unveiled **faces** all reflect the |
| Intensifying | 2C 3:18 | image with **intensifying** glory, which |
| Reflect | 2C 3:18 | unveiled faces all **reflect** the glory of |
| Transformed | 2C 3:18 | Lord, are being **transformed** into His image |
| Unveiled | 2C 3:18 | we, who with **unveiled** faces all reflect |
| Deceit | 2C 4: 2 | do not practice **deceit**, nor do we |
| Distort | 2C 4: 2 | deceit, nor do we **distort** the word of God. |
| Proclamation | 2C 4: 2 | by open **proclamation** of the |
| Renounced | 2C 4: 2 | we have **renounced** secret and |
| Secret | 2C 4: 2 | we have renounced **secret** and shameful ways. |
| Blinded | 2C 4: 4 | this age has **blinded** the minds of |
| Clay | 2C 4: 7 | treasure in jars of **clay** to show that this |
| Jars | 2C 4: 7 | have this treasure in **jars** of clay to show |
| Treasure | 2C 4: 7 | Now we have this **treasure** in jars of clay |
| Crushed | 2C 4: 8 | sides, but not **crushed**; perplexed, but not |
| Despair | 2C 4: 8 | crushed; perplexed, but not in **despair**; |
| Perplexed | 2C 4: 8 | but not crushed; **perplexed**, but not in |
| Sides | 2C 4: 8 | pressed on all **sides**, but not crushed; |
| Forsaken | 2C 4: 9 | but not **forsaken**; struck down, |
| Around | 2C 4:10 | We always carry **around** in our body the |
| Consigned | 2C 4:11 | alive are always **consigned** to death for |
| Knowing | 2C 4:14 | **knowing** that the One who raised the |
| Extending | 2C 4:15 | grace that is **extending** to more and |
| Inner | 2C 4:16 | away, yet our **inner** self is being |
| Outer | 2C 4:16 | heart. Though our **outer** self is wasting |
| Renewed | 2C 4:16 | inner self is being **renewed** day by day. |
| Wasting | 2C 4:16 | outer self is **wasting** away, yet our |
| Affliction | 2C 4:17 | and temporary **affliction** is producing |
| Outweighs | 2C 4:17 | glory that far **outweighs** our troubles. |
| Producing | 2C 4:17 | temporary affliction is **producing** for us an |
| Fix | 2C 4:18 | So we **fix** our eyes not on what is |
| Dismantled | 2C 5: 1 | live in is **dismantled**, we have a |
| Dwelling | 2C 5: 2 | to be clothed with our heavenly **dwelling**, |
| Naked | 2C 5: 3 | clothed, we will not be found **naked**. |
| Burdens | 2C 5: 4 | groan under our **burdens**, because we do |
| Mortality | 2C 5: 4 | so that our **mortality** may be swallowed |
| Unclothed | 2C 5: 4 | wish to be **unclothed** but clothed, so |
| Aspire | 2C 5: 9 | So we **aspire** to please Him, whether we are |
| Due | 2C 5:10 | one may receive his **due** for the things done |
| Seat | 2C 5:10 | before the judgment **seat** of Christ, that |
| Persuade | 2C 5:11 | Lord, we try to **persuade** men. What we are |
| Commending | 2C 5:12 | We are not **commending** ourselves to you |
| Compels | 2C 5:14 | For Christ's love **compels** us, because we |
| Convinced | 2C 5:14 | because we are **convinced** that One died |
| Creation | 2C 5:17 | he is a new **creation**. The old has passed |
| Counting | 2C 5:19 | Christ, not **counting** men's trespasses |
| Reconciling | 2C 5:19 | that God was **reconciling** the world to |
| Trespasses | 2C 5:19 | counting men's **trespasses** against them. |
| Ambassadors | 2C 5:20 | Therefore we are **ambassadors** for Christ, as |
| Implore | 2C 5:20 | through us. We **implore** you on behalf |
| Knew | 2C 5:21 | God made Him who **knew** no sin to be sin on |
| Helped | 2C 6: 2 | of salvation I **helped** you.| Behold, now |
| Discredit | 2C 6: 3 | so that no one can **discredit** our ministry. |
| Obstacle | 2C 6: 3 | We put no **obstacle** in anyone's way, so |
| Calamities | 2C 6: 4 | in troubles, hardships, and **calamities**; |
| Nights | 2C 6: 5 | in labor, sleepless **nights**, and hunger; |
| Riots | 2C 6: 5 | imprisonments, and **riots**; in labor, |
| Sleepless | 2C 6: 5 | in labor, **sleepless** nights, and |
| Kindness | 2C 6: 6 | patience, and **kindness**; in the |
| Patience | 2C 6: 6 | purity, knowledge, **patience**, and kindness; |
| Purity | 2C 6: 6 | in **purity**, knowledge, patience, and |
| Sincere | 2C 6: 6 | in the Holy Spirit and in **sincere** love; |
| Truthful | 2C 6: 7 | in **truthful** speech and in the power of |
| Genuine | 2C 6: 8 | praise; viewed as imposters, yet **genuine**; |
| Imposters | 2C 6: 8 | praise; viewed as **imposters**, yet genuine; |
| Viewed | 2C 6: 8 | and praise; **viewed** as imposters, |
| Dying | 2C 6: 9 | unknown, yet well-known; **dying**, and yet we |
| Punished | 2C 6: 9 | yet we live on; **punished**, yet not killed; |
| Unknown | 2C 6: 9 | as **unknown**, yet well-known; dying, and yet |
| Well-known | 2C 6: 9 | as unknown, yet **well-known**; dying, and yet |
| Possessing | 2C 6:10 | nothing, and yet **possessing** everything. |
| Rejoicing | 2C 6:10 | yet always **rejoicing**; poor, yet |
| Corinthians | 2C 6:11 | freely to you, **Corinthians**. Our hearts are |
| Exchange | 2C 6:13 | As a fair **exchange**, I ask you as my |
| Fair | 2C 6:13 | As a **fair** exchange, I ask you as my |
| Partnership | 2C 6:14 | For what **partnership** can righteousness |
| Unequally | 2C 6:14 | Do not be **unequally** yoked with unbelievers. |
| Yoked | 2C 6:14 | be unequally **yoked** with unbelievers. |
| Belial | 2C 6:15 | between Christ and **Belial**? Or what does |
| Believer | 2C 6:15 | Or what does a **believer** have in common with |
| Agreement | 2C 6:16 | What **agreement** can exist between the |
| Touch | 2C 6:17 | says the Lord. **Touch** no unclean thing, |
| Almighty | 2C 6:18 | and daughters, says the Lord **Almighty.|** |
| Daughters | 2C 6:18 | My sons and **daughters**, says the Lord |
| Sons | 2C 6:18 | you will be My **sons** and daughters, says the |
| Cleanse | 2C 7: 1 | let us **cleanse** ourselves from |
| Defiles | 2C 7: 1 | everything that **defiles** body and |
| Perfecting | 2C 7: 1 | body and spirit, **perfecting** holiness in the |
| Corrupted | 2C 7: 2 | no one, we have **corrupted** no one, we have |
| Exploited | 2C 7: 2 | no one, we have **exploited** no one. |
| Room | 2C 7: 2 | Make **room** for us in your hearts. We |
| Condemn | 2C 7: 3 | not say this to **condemn** you. I have said |
| Occupy | 2C 7: 3 | that you so **occupy** our hearts that |
| Filled | 2C 7: 4 | you; I am **filled** with encouragement; in |
| Conflicts | 2C 7: 5 | every direction--**conflicts** on the |
| Direction | 2C 7: 5 | from every **direction**--conflicts on |
| Fears | 2C 7: 5 | conflicts on the outside, **fears** within. |
| Downcast | 2C 7: 6 | who comforts the **downcast**, comforted us by |
| Mourning | 2C 7: 7 | your longing, your **mourning**, and your zeal |
| Rejoiced | 2C 7: 7 | for me, so that I **rejoiced** all the more. |
| Alarm | 2C 7:11 | indignation, what **alarm**, what longing, |
| Indignation | 2C 7:11 | yourselves, what **indignation**, what alarm, |
| Innocent | 2C 7:11 | yourselves to be **innocent** in this matter. |
| Produced | 2C 7:11 | godly sorrow has **produced** in you: what |
| Vindication | 2C 7:11 | what zeal, what **vindication**! In every way |
| Addition | 2C 7:13 | are encouraged. In **addition** to our own |
| Delighted | 2C 7:13 | we were even more **delighted** by the joy of |
| Boasted | 2C 7:14 | by anything I had **boasted** to him about you. |
| Embarrassed | 2C 7:14 | I was not **embarrassed** by anything I |
| Remembers | 2C 7:15 | greater when he **remembers** that you were |
| Welcomed | 2C 7:15 | obedient as you **welcomed** him with fear |
| Abundant | 2C 8: 2 | they suffered, their **abundant** joy and deep |
| Ordeal | 2C 8: 2 | In the terrible **ordeal** they suffered, their |
| Overflowed | 2C 8: 2 | deep poverty **overflowed** into rich |
| Suffered | 2C 8: 2 | ordeal they **suffered**, their abundant |
| Terrible | 2C 8: 2 | In the **terrible** ordeal they suffered, |
| Accord | 2C 8: 3 | even beyond it. Of their own **accord**, |
| Testify | 2C 8: 3 | For I **testify** that they gave according to |
| Privilege | 2C 8: 4 | earnestly for the **privilege** of sharing in |
| Sharing | 2C 8: 4 | the privilege of **sharing** in this service |
| Expected | 2C 8: 5 | do as we **expected**, but they gave |
| Started | 2C 8: 6 | of grace, just as he had **started** it. |
| Inspired | 2C 8: 7 | in the love we **inspired** in you--see that |
| Testing | 2C 8: 8 | but I am **testing** the sincerity of |
| Sakes | 2C 8: 9 | rich, yet for your **sakes** He became poor, so |
| Helpful | 2C 8:10 | about what is **helpful** for you in |
| Opinion | 2C 8:10 | this is my **opinion** about what is |
| Finish | 2C 8:11 | Now **finish** the work, so that you may |
| Acceptable | 2C 8:12 | the gift is **acceptable** according to what |
| Burdened | 2C 8:13 | while you are **burdened**, but that there |
| Intention | 2C 8:13 | It is not our **intention** that others may be |
| Relieved | 2C 8:13 | others may be **relieved** while you are |
| Excess | 2C 8:15 | much had no **excess**, and he who |
| Shortfall | 2C 8:15 | he who gathered little had no **shortfall.|** |
| Volition | 2C 8:17 | coming to you of his own **volition**. |
| Welcome | 2C 8:17 | not only did he **welcome** our appeal, but he |
| Praised | 2C 8:18 | brother who is **praised** by all the |
| Accompany | 2C 8:19 | the churches to **accompany** us with the |
| Chosen | 2C 8:19 | this brother was **chosen** by the churches |
| Gracious | 2C 8:19 | offering--the **gracious** gift we |
| Offering | 2C 8:19 | us with the **offering**--the gracious gift |
| Avoid | 2C 8:20 | We hope to **avoid** any criticism of the way |
| Criticism | 2C 8:20 | hope to avoid any **criticism** of the way we |
| Taking | 2C 8:21 | For we are **taking** great care to do what is |
| Proven | 2C 8:22 | earnestness has been **proven** many times and |
| Whose | 2C 8:22 | our brother, **whose** earnestness has |
| Messengers | 2C 8:23 | they are **messengers** of the |
| Partner | 2C 8:23 | he is my **partner** and fellow worker |
| Full | 2C 8:24 | In **full** view of the churches, then, show |
| View | 2C 8:24 | In full **view** of the churches, then, show |
| Stirred | 2C 9: 2 | And your zeal has **stirred** most of them to |
| Empty | 2C 9: 3 | should not prove **empty**, but that you |
| Unprepared | 2C 9: 4 | and find you **unprepared**, we--to say |
| Arrangements | 2C 9: 5 | and make **arrangements** for the |
| Beforehand | 2C 9: 5 | visit you **beforehand** and make |
| Begrudgingly | 2C 9: 5 | prepared generously and not **begrudgingly**. |
| Bountiful | 2C 9: 5 | arrangements for the **bountiful** gift you had |
| Necessary | 2C 9: 5 | I thought it **necessary** to urge the |
| Cheerful | 2C 9: 7 | For God loves a **cheerful** giver. |
| Compulsion | 2C 9: 7 | of regret or **compulsion**. For God loves |
| Giver | 2C 9: 7 | For God loves a cheerful **giver**. |
| Able | 2C 9: 8 | And God is **able** to make all grace abound |
| Abroad | 2C 9: 9 | |He has scattered **abroad** His gifts to |
| Scattered | 2C 9: 9 | written: |He has **scattered** abroad His gifts |
| Multiply | 2C 9:10 | will supply and **multiply** your store of |
| Sower | 2C 9:10 | seed to the **sower** and bread for |
| Store | 2C 9:10 | and multiply your **store** of seed and |
| Supplies | 2C 9:10 | Now He who **supplies** seed to the sower and |
| Supply | 2C 9:10 | for food will **supply** and multiply your |
| Produce | 2C 9:11 | us will **produce** thanksgiving to |
| Expressions | 2C 9:12 | in many **expressions** of thanksgiving |
| Overflowing | 2C 9:12 | but is also **overflowing** in many expressions |
| Supplying | 2C 9:12 | is not only **supplying** the needs of |
| Confession | 2C 9:13 | for your obedient **confession** of the gospel |
| Contribution | 2C 9:13 | generosity of your **contribution** to them and |
| Provides | 2C 9:13 | this ministry **provides**, the saints |
| Express | 2C 9:14 | for you will **express** their affection for |
| Surpassing | 2C 9:14 | because of the **surpassing** grace God has |
| Indescribable | 2C 9:15 | be to God for His **indescribable** gift! |
| Gentleness | 2C 10: 1 | the mildness and **gentleness** of Christ, I |
| Mildness | 2C 10: 1 | Now by the **mildness** and gentleness of |
| Beg | 2C 10: 2 | I **beg** you that when I come, I |
| Presume | 2C 10: 2 | toward those who **presume** that we live |
| Wage | 2C 10: 3 | flesh, we do not **wage** war according to the |
| War | 2C 10: 3 | we do not wage **war** according to the flesh. |
| Demolish | 2C 10: 4 | have divine power to **demolish** strongholds. |
| Strongholds | 2C 10: 4 | have divine power to demolish **strongholds**. |
| Warfare | 2C 10: 4 | weapons of our **warfare** are not the |
| Arguments | 2C 10: 5 | tear down **arguments**, and every |
| Captive | 2C 10: 5 | and we take **captive** every thought to |
| Presumption | 2C 10: 5 | and every **presumption** set up |
| Tear | 2C 10: 5 | We **tear** down arguments, and every |
| Disobedience | 2C 10: 6 | every act of **disobedience**, as soon as |
| Obedience | 2C 10: 6 | as soon as your **obedience** is complete. |
| Punish | 2C 10: 6 | be ready to **punish** every act of |
| Soon | 2C 10: 6 | of disobedience, as **soon** as your obedience |
| Looking | 2C 10: 7 | You are **looking** at outward appearances. If |
| Outward | 2C 10: 7 | looking at **outward** appearances. If |
| Excessively | 2C 10: 8 | boast somewhat **excessively** about the |
| Somewhat | 2C 10: 8 | if I boast **somewhat** excessively about the |
| Frighten | 2C 10: 9 | to be trying to **frighten** you by my letters. |
| Forceful | 2C 10:10 | are weighty and **forceful**, but his physical |
| Physical | 2C 10:10 | but his **physical** presence is |
| Unimpressive | 2C 10:10 | presence is **unimpressive**, and his |
| Weighty | 2C 10:10 | |His letters are **weighty** and forceful, but |
| Classify | 2C 10:12 | not dare to **classify** or compare ourselves |
| Ignorance | 2C 10:12 | themselves, they show their **ignorance**. |
| Measure | 2C 10:12 | When they **measure** themselves by |
| Reaches | 2C 10:13 | to us--a field that **reaches** even to you. |
| Bounds | 2C 10:14 | not overstepping our **bounds**, as if we |
| Overstepping | 2C 10:14 | We are not **overstepping** our bounds, as if |
| Reach | 2C 10:14 | were the first to **reach** you with the gospel |
| Area | 2C 10:15 | increases, our **area** of influence |
| Greatly | 2C 10:15 | among you will **greatly** increase as well, |
| Increases | 2C 10:15 | as your faith **increases**, our area of |
| Labors | 2C 10:15 | our limits in the **labors** of others. But we |
| Territory | 2C 10:16 | already done in another man's **territory**. |
| Jealous | 2C 11: 2 | I am **jealous** for you with a godly |
| Cunning | 2C 11: 3 | by the serpent's **cunning**, your minds may |
| Eve | 2C 11: 3 | that just as **Eve** was deceived by |
| Serpent’s | 2C 11: 3 | by the **serpent's** cunning, your |
| Simple | 2C 11: 3 | astray from your **simple** and pure devotion |
| Accepted | 2C 11: 4 | than the one you **accepted**, you put up with |
| Proclaims | 2C 11: 4 | someone comes and **proclaims** a Jesus other |
| Certainly | 2C 11: 6 | speaker, I am **certainly** not lacking in |
| Polished | 2C 11: 6 | I am not a **polished** speaker, I am certainly |
| Exalt | 2C 11: 7 | in order to **exalt** you, because I |
| Accepting | 2C 11: 8 | churches by **accepting** their support |
| Robbed | 2C 11: 8 | I **robbed** other churches by accepting their |
| Continue | 2C 11: 9 | in any way, and I will **continue** to do so. |
| Refrained | 2C 11: 9 | needs. I have **refrained** from being a |
| Silenced | 2C 11:10 | mine will not be **silenced** in the regions of |
| Equals | 2C 11:12 | regarded as our **equals** in the things |
| Undercut | 2C 11:12 | in order to **undercut** those who want |
| Deceitful | 2C 11:13 | false apostles, **deceitful** workers, masquerading |
| Masquerading | 2C 11:13 | deceitful workers, **masquerading** as apostles |
| Masquerades | 2C 11:14 | for Satan himself **masquerades** as an angel |
| Wonder | 2C 11:14 | And no **wonder**, for Satan himself |
| Correspond | 2C 11:15 | Their end will **correspond** to their actions. |
| Masquerade | 2C 11:15 | if his servants **masquerade** as servants of |
| Surprising | 2C 11:15 | It is not **surprising**, then, if his |
| Repeat | 2C 11:16 | I **repeat**: Let no one take me for |
| Tolerate | 2C 11:19 | For you gladly **tolerate** fools, since you |
| Advantage | 2C 11:20 | you or takes **advantage** of you or |
| Enslaves | 2C 11:20 | with anyone who **enslaves** you or exploits |
| Exalts | 2C 11:20 | of you or **exalts** himself or strikes |
| Exploits | 2C 11:20 | enslaves you or **exploits** you or takes |
| Strikes | 2C 11:20 | exalts himself or **strikes** you in the |
| Concede | 2C 11:21 | To my shame I **concede** that we were too |
| Dares | 2C 11:21 | what anyone else **dares** to boast about. |
| Match | 2C 11:21 | however, I can **match** what anyone else |
| Abraham | 2C 11:22 | Are they descendants of **Abraham**? So am I. |
| Descendants | 2C 11:22 | I. Are they **descendants** of Abraham? So |
| Hebrews | 2C 11:22 | Are they **Hebrews**? So am I. Are they |
| Forty | 2C 11:24 | from the Jews the **forty** lashes minus one. |
| Lashes | 2C 11:24 | from the Jews the forty **lashes** minus one. |
| Minus | 2C 11:24 | from the Jews the forty lashes **minus** one. |
| Beaten | 2C 11:25 | Three times I was **beaten** with rods, once I |
| Rods | 2C 11:25 | I was beaten with **rods**, once I was stoned, |
| Shipwrecked | 2C 11:25 | times I was **shipwrecked**. I spent a |
| Spent | 2C 11:25 | I was shipwrecked. I **spent** a night and a |
| Stoned | 2C 11:25 | rods, once I was **stoned**, three times I was |
| Bandits | 2C 11:26 | rivers and from **bandits**, in danger from |
| Country | 2C 11:26 | city and in the **country**, in danger on the |
| Countrymen | 2C 11:26 | danger from my **countrymen** and from the |
| Journeys | 2C 11:26 | In my frequent **journeys**, I have been in |
| Rivers | 2C 11:26 | in danger from **rivers** and from bandits, |
| Cold | 2C 11:27 | often without food, in **cold** and exposure. |
| Exposure | 2C 11:27 | often without food, in cold and **exposure**. |
| Thirst | 2C 11:27 | in hunger and **thirst** and often without |
| Toil | 2C 11:27 | in labor and **toil** and often without sleep, |
| Apart | 2C 11:28 | **Apart** from these external trials, I face |
| Daily | 2C 11:28 | trials, I face **daily** the pressure of |
| External | 2C 11:28 | Apart from these **external** trials, I face |
| Pressure | 2C 11:28 | I face daily the **pressure** of my concern for |
| Trials | 2C 11:28 | from these external **trials**, I face daily |
| Lying | 2C 11:31 | praise, knows that I am not **lying**. |
| Worthy | 2C 11:31 | who is forever **worthy** of praise, knows |
| Aretas | 2C 11:32 | governor under King **Aretas** secured the city |
| Arrest | 2C 11:32 | of the Damascenes in order to **arrest** me. |
| Damascenes | 2C 11:32 | city of the **Damascenes** in order to |
| Damascus | 2C 11:32 | In **Damascus**, the governor under King |
| Governor | 2C 11:32 | In Damascus, the **governor** under King Aretas |
| King | 2C 11:32 | the governor under **King** Aretas secured the |
| Secured | 2C 11:32 | under King Aretas **secured** the city of |
| Basket | 2C 11:33 | was lowered in a **basket** through a window in |
| Escaped | 2C 11:33 | window in the wall and **escaped** his grasp. |
| Grasp | 2C 11:33 | in the wall and escaped his **grasp**. |
| Lowered | 2C 11:33 | But I was **lowered** in a basket through a |
| Wall | 2C 11:33 | a window in the **wall** and escaped his grasp. |
| Window | 2C 11:33 | a basket through a **window** in the wall and |
| Visions | 2C 12: 1 | go on to **visions** and revelations from |
| Ago | 2C 12: 2 | who fourteen years **ago** was caught up |
| Fourteen | 2C 12: 2 | in Christ who **fourteen** years ago was |
| Years | 2C 12: 2 | Christ who fourteen **years** ago was caught |
| Paradise | 2C 12: 4 | caught up into **Paradise**. The things he |
| Sacred | 2C 12: 4 | heard were too **sacred** for words, things |
| Credit | 2C 12: 6 | so no one will **credit** me with more than |
| Hears | 2C 12: 6 | than he sees in me or **hears** from me, |
| Refrain | 2C 12: 6 | the truth. But I **refrain**, so no one will |
| Becoming | 2C 12: 7 | keep me from **becoming** conceited, I was |
| Conceited | 2C 12: 7 | me from becoming **conceited**, I was given |
| Messenger | 2C 12: 7 | my flesh, a **messenger** of Satan, to |
| Thorn | 2C 12: 7 | I was given a **thorn** in my flesh, a |
| Torment | 2C 12: 7 | a messenger of Satan, to **torment** me. |
| Perfected | 2C 12: 9 | power is **perfected** in weakness.| |
| Delight | 2C 12:10 | of Christ, I **delight** in weaknesses, in |
| Difficulties | 2C 12:10 | persecutions, in **difficulties**. For when |
| Insults | 2C 12:10 | in weaknesses, in **insults**, in hardships, in |
| Persecutions | 2C 12:10 | hardships, in **persecutions**, in difficulties. |
| Commended | 2C 12:11 | you should have **commended** me, since I |
| Drove | 2C 12:11 | a fool, but you **drove** me to it. In |
| Marks | 2C 12:12 | The true **marks** of an apostle--signs, |
| Performed | 2C 12:12 | miracles--were **performed** among you |
| Perseverance | 2C 12:12 | among you with great **perseverance**. |
| Wonders | 2C 12:12 | apostle--signs, **wonders**, and miracles-- |
| Possessions | 2C 12:14 | seeking your **possessions**, but you |
| Money | 2C 12:15 | most gladly spend my **money** and myself. If I |
| Souls | 2C 12:15 | the sake of your **souls**, I will most gladly |
| Crafty | 2C 12:16 | burden to you; but **crafty** as I am, I |
| Trickery | 2C 12:16 | I am, I caught you by **trickery**. |
| Overreach | 2C 12:17 | Did I **overreach** by anyone I sent you? |
| Exploit | 2C 12:18 | with him. Did Titus **exploit** you in any way? |
| Footsteps | 2C 12:18 | spirit and follow in the same **footsteps**? |
| Arrogance | 2C 12:20 | slander, gossip, **arrogance**, and disorder. |
| Gossip | 2C 12:20 | rivalry, slander, **gossip**, arrogance, and |
| Quarreling | 2C 12:20 | may be **quarreling**, jealousy, rage, |
| Rage | 2C 12:20 | quarreling, jealousy, **rage**, rivalry, slander, |
| Rivalry | 2C 12:20 | jealousy, rage, **rivalry**, slander, gossip, |
| Debauchery | 2C 12:21 | sexual immorality, and **debauchery**. |
| Impurity | 2C 12:21 | acts of **impurity**, sexual immorality, |
| Repented | 2C 12:21 | and have not **repented** of their acts |
| Absence | 2C 13: 2 | So now in my **absence**, I warn those who |
| Warned | 2C 13: 2 | I already **warned** you the second time I was |
| Dealing | 2C 13: 3 | is not weak in **dealing** with you, but is |
| Demanding | 2C 13: 3 | since you are **demanding** proof that Christ |
| Can'T | 2C 13: 5 | faith; test yourselves. **Can't** you see for |
| Fail | 2C 13: 5 | you--unless you actually **fail** the test? |
| Realize | 2C 13: 6 | I hope you will **realize** that we have not |
| Perfection | 2C 13: 9 | and our prayer is for your **perfection**. |
| Severe | 2C 13:10 | will not need to be **severe** in my use of the |
| Aim | 2C 13:11 | brothers, rejoice! **Aim** for perfect |
| Encourage | 2C 13:11 | perfect harmony, **encourage** one another, |
| Finally | 2C 13:11 | **Finally**, brothers, rejoice! Aim for |

 |  |  |
|  |  |  |
|  |  |  |
|  |  |  |
|  |  |  |